

पैगंबर मुहम्मद के साथी: अबू हुरैरा

रेटगि:

वविरण: ?????? ??? ?????? ?? ?? ?????????? ???????

श्रेणी: [पाठ](#) , [पैगंबर मुहम्मद](#) , [उनके साथी](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2014 IslamReligion.com)

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उददेश्य:

·यह समझना कहिर कसी के पास अद्वतीय और वशिष उपहार होते हैं।

·इस्लाम और मानवजातको लाभ पहुंचाने के लिए मुसलमानों को अपने उपहारों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहति करना।

अरबी शब्द:

·???? - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रिकॉर्ड है।

·???????? - एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करना। इस्लाम में, हजिराह मक्का से मदीना की ओर पलायन करने वाले मुसलमानों को संदर्भति करता है और इस्लामी कैलेंडर की शुरुआत का भी प्रतीक है।

·???????? - यह अक्सर अरबी नाम का पहला भाग होता है, सैद्धांतिक रूप से यह वाहक के पहले जन्मे बेटे या बेटी को संदर्भति करता है। वसितार से, इसमें काल्पनिक या रूपक संदर्भ भी हो सकते हैं, उदाहरण के लिए एक उपनाम, बनिा कसी बेटे या बेटी का शाब्दिक उल्लेख कए। इसे अबू या उम्म के प्रयोग से व्यक्त कया जाता है, उदाहरण के लिए उम्म मुहम्मद का अर्थ है मुहम्मद की मां।

·???????? - प्रार्थना स्थल का अरबी शब्द।

·???? - स्वैच्छिक दान।

·???????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, कया या करने को कहा।

·????? - मुसलमि समुदाय चाहे वो कसिी भी रंग, जात, भाषा या राष्ट्रियता का हो।

कई लोग अबू हुरैरा को बड़ी संख्या में हदीसों को याद करने वाले और प्रसारित करने वाले के रूप में जानते हैं। जबकि यह वास्तव में एक महान गुण है और सुन्नत की संपत्तियों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए मुसलमान उनके कृतज्ञ हैं, अबू हुरैरा एक वपुल स्मृति वाले व्यक्ति से कहीं अधिक थे।



अबू हुरैरा को बलिली के बच्चे और बलिलियां बहुत पसंद थीं! वह अपनी मां के प्रति समर्पित थे और उससे भी अधिक अल्लाह और उसके दूत के प्रति समर्पित थे। वह अहल अस-सुफ़ा के नाम से जाने जाने वाले समूह का सदस्य थे और खलीफा उमर इब्न अल-खत्ताब के शासनकाल में उन्हें बहरीन का गवर्नर नियुक्त किया गया था। अबू हुरैरा की मृत्यु 681 ईस्वी में 78 वर्ष की आयु में हुई थी।

अबू हुरैरा का जन्म तहिमा नामक क्षेत्र से दाऊ के यमनी जनजात के सदस्य के रूप में हुआ था। उन्होंने कबीले के सरदार के निमित्त पर इस्लाम धर्म अपनाया और ऐसा करने वाले वह अपनी जनजात के पहले लोगों में से एक थे। हजिराह के सात साल बाद वह एक छोटे से प्रतिनिधिमंडल के साथ मदीना गए और पैगंबर मुहम्मद से मिले। यह एक आजीवन रश्ते की शुरुआत थी, एक ऐसा रश्ते जिससे आज भी मुसलमान लाभान्वित हो रहे हैं।

अबू हुरैरा नाम इस असाधारण व्यक्ति को जन्म के समय दिया गया नाम नहीं था, यह उनका कुन्या था, और इसका अर्थ है 'बलिली के बच्चे का पिता'। अबू हुरैरा को बलिलियां और बलिली के बच्चे बहुत पसंद थे। दोनों के बीच इस हद तक सहजीवी संबंध थे कि जब पैगंबर मुहम्मद ने उनके जन्म का नाम अब्द अश-शम्स से अब्द-अर-रहमान में बदल दिया, तब भी उनका कुन्या वही बना रहा। सूरज का गुलाम (अब्द अश -शम्स) सबसे दयालु (अब्द अर-रहमान) का गुलाम बन गया और वह अपने पैगंबर को समर्पित थे। उन्होंने जितना संभव हो उतना समय पैगंबर की संगत में बिताया और शुरू से ही उनके द्वारा बोले गए हर शब्द को याद रखने की कोशिश की।

ऐसा अनुमान है कि अबू हुरैरा ने लगभग 5,375 हदीसों को सुनाया। उन्हें एक अभूतपूर्व स्मृति के रूप में वर्णित किया गया है और इसका कारण हदीस में पाया जा सकता है। मैंने (अबू हुरैरा) ने अल्लाह के दूत से कहा, "मैं आपसे कई बातें सुनता हूँ लेकिन मैं उन्हें भूल जाता हूँ।" अल्लाह के दूत ने कहा, "अपना वस्त्र फैलाओ।" मैंने वैसा ही किया और फिर उन्होंने अपने हाथों को ऐसे हिलाया जैसे कि उन्हें किसी चीज़ से भर रहे हों और उन्हें मेरे वस्त्र में खाली कर दिया और फिर कहा, "इस चादर को अपने शरीर पर लपेटो।" मैंने ऐसा ही किया और उसके बाद से मैं एक भी बात कभी नहीं भूला।^[1]

जब अबू हुरैरा ने पैगंबर के करीब रहने के लिए मदीना में रहने का फैसला किया, तो वह अहल अस-सुफ्फा नामक एक समूह के सदस्य बन गए। ये समूह गरीबों का था जिन्होंने मस्जिद में नव्वास किया, जब तक कि समय और परिस्थिति ने उन्हें खुद के नव्वास में रहने की अनुमति नहीं दी। इस समय वे सड़क पर नरिभर रहते थे और पैगंबर मुहम्मद को मलिनने वाले किसी भी सड़क और उपहार को पैगंबर मुहम्मद खुद उन्हें भेजते थे। अधिकांश, अबू हुरैरा की तरह, अपने तन के कपड़ों के अलावा बेसहारा थे। अबू हुरैरा ने खुद बताया है कि कैसे वह अपनी तीव्र भूख के दर्द को शांत करने के लिए जमीन पर लेटते या अपने पेट पर पत्थर बांधते थे।

जब अबू हुरैरा मदीना पहुंचे तो उनकी मां उनके साथ थी। वह अपनी मां के प्रति सिमरपति थे और इस बात से दुखी होते थे कि उनकी मां ने इस्लाम को अपनाने से इनकार किया था। एक विशेष दुखद घटना के एक दिन बाद, जिसमें अबू हुरैरा की मां ने पैगंबर का अपमान किया था, वह पैगंबर मुहम्मद के पास आंखों में आंसू लिए गए। पैगंबर मुहम्मद ने पूछा कि वो क्यों रो रहे हैं और उन्होंने जवाब दिया, "मैंने अपनी मां को इस्लाम में आमंत्रित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है, लेकिन उन्होंने हमेशा मुझे फटकार लगाई। आज, मैंने उन्हें फिर से आमंत्रित किया और मैंने उनसे ऐसे शब्द सुने जिनसे मैं शर्मिंदा हूँ। कृपया सर्वशक्तिमान अल्लाह से प्रार्थना करें कि उसका दिल इस्लाम की ओर झुक जाए।"

पैगंबर ने अबू हुरैरा की मां के लिए प्रार्थना की। अबू हुरैरा ने अपनी कहानी यह कहते हुए समाप्त की, "मैं घर गया और मैंने दरवाजा बंद पाया। मैंने पानी के छींटे सुनी और जब मैंने घर में घुसने की कोशिश की तो मेरी मां ने कहा, 'अरे अबू हुरैरा, जहां तुम हो वहीं रहो।' फिर उन्होंने कहा, 'अंदर आ जाओ!' मैं अंदर गया और उन्होंने कहा, 'मैं गवाही देती हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई ईश्वर नहीं है और मैं गवाही देती हूँ कि मुहम्मद उनके दास और उनके दूत हैं।'"

अबू हुरैरा ने हमेशा दूसरों को अपने माता-पिता के प्रति दयालु और अच्छा बनने के लिए प्रोत्साहित किया। एक दिन उन्होंने दो आदमियों को एक साथ चलते देखा और छोटे से पूछा, "यह आदमी तुम्हारा क्या लगता है?" युवक ने उत्तर दिया, "यह मेरे पिता हैं।" अबू हुरैरा ने उसे यह कहते हुए सलाह दी, "उन्हें उनके नाम से न बुलाना, उनके आगे न चलना, और उनसे पहले न बैठना।"

जब अबू हुरैरा अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखते तो कहते कि उन्होंने तीन बड़ी त्रासदियों को देखा है; पैगंबर मुहम्मद की मृत्यु, उस्मान की हत्या और मजिवाद का गायब होना। जब उनसे पूछा गया कि मजिवाद क्या है, तो उन्होंने कहा कि पैगंबर ने अपनी एक यात्रा पर पूछा कि क्या किसी के पास कुछ खाना है। किसी ने कहा कि उसके पास मजिवाद है, सामान रखने के लिए एक छोटा सा थैला और उसमें कुछ खजूर थे। पैगंबर ने मजिवाद मांगा, उन्होंने खजूरों पर दुआ की और उन्हें सभी उपस्थिति लोगों को बांट दिया। अबू हुरैरा ने बताया कि वो अपने हस्से में से पैगंबर के जीवनकाल के दौरान और अबू बकर, उमर और उस्मान की खिलाफत के दौरान खाते रहे।^[2]

खलीफा उमर इब्न अल-खत्ताब ने अबू हुरैरा को बहरीन का गवर्नर नियुक्त किया, लेकिन थोड़े समय के बाद वह सेवानिवृत्त हो गए और मदीना लौट आए जहां उन्होंने अपना शेष जीवन अकेले बितिया। समय बदल रहा था और अबू हुरैरा ने अल्लाह को याद करते हुए और मुस्लिम उम्मत के जन्म को याद करते हुए एक तपस्वी जीवन जीना पसंद किया।

जब अबू हुरैरा ने अल्लाह से मल्लि उपहार का इस्तेमाल इस्लाम के लाभ के लिए किया, तो उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि एक अरब से अधिक मुसलमान जब भी पैगंबर मुहम्मद के जीवन और समय और धर्म के बारे में सीखेंगे तो उनका नाम लेंगे। "अबू हुरैरा के अधिकार पर, जैसा की उन्होंने कहा, अल्लाह के दूत ने कहा ..."यह एक ऐसा वाक्यांश है जिससे हम कभी न कभी उपयोग करेंगे। अबू हुरैरा का जीवन इस बात की गवाही है कि अल्लाह हमें इस दुनिया में सबसे अच्छे तरीके से जीने और अपने भाग्य को पूरा करने के लिए आवश्यक क्षमता और उपहार देता है।

फुटनोट:

[1]

???? ??-???????

[2]

अल-बैहाकी और क़ादी 'इयाद की शफ़ा से संबंधित

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/268>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।